

**अक्रियावाद** पुं. (तत्.) दर्शन यह मत कि न कोई कर्म है, न अकर्म, न कोई क्रिया है, न कोई प्रयत्न और न ही कुछ पाप है, न ही कोई पुण्य।

**अक्रिस्टलीय** वि. (देश.) 1. रसा. अकेलासीय, जो केलासीय न हो उदा. काँच अक्रिस्टलीय ठोस है 2. भू.वि. पुं. रूपविहीन, (वे शैल खनिज पदार्थ) जिनमें कोई निश्चित क्रिस्टलीय संरचना नहीं होती। non-crystal

**अक्रिस्टलीयता** स्त्री. (देश.) (किसी ठोस पदार्थ की) अक्रिस्टलीय अवस्था।

**अक्रूर** वि. (तत्.) 1. जो क्रूर न हो 2. दयालु, कोमल सुशील, सहृदय पुं. द्वापर युग में इस नाम के कृष्ण के चाचा जो उनके भक्त थे।

**अक्रोध** पुं. (तत्.) क्रोध का न होना अथवा अभाव, क्रोध शून्यता, सहिष्णुता।

**अक्रौर्य** पुं. (तत्.) क्रूरता का अभाव, अक्रूरता।

**अक्ल** स्त्री. (अर.) 1. बुद्धि, समझ, ज्ञान। 2. चातुर्य, होशियारी मुहा. अक्ल आना- समझ में आना, समझदार बनना, सही रास्ते पर आना; अक्ल उड़ना- समझ में कुछ न आना, घबड़ा जाना; अक्ल उल्टी होना- नामसझ होना, मूर्ख बनना; अक्ल अँधी होना- अक्ल उलटी होना; अक्ल का अंधा- बिल्कुल मूर्ख, अक्ल का दीवाला होना; अक्ल का दुश्मन- अत्यंत मूर्ख, पूरा-मूर्ख (व्यंग्य); अक्ल का मारा- बहुत मूर्ख; अक्ल की मार पड़ना- बुद्धि का लोप होना; अक्ल के घोड़े दौड़ाना- ख्याली पुलाव पकाना; अक्ल के तोते उड़ना- घबरा जाना, होश-हवास खो बैठना; अक्ल के पीछे लट्ठ लेकर फिरना-विवेकरहित कार्य करना; अक्ल को रोना-अफसोस करना; अक्ल गुम होना -होश-हवास गुम होना; अक्ल जाती रहना- समझ में न आना; अक्ल ठिकाने आना-होश-हवास दुरुस्त होना; अक्ल ठिकाने न रहना-होश-हवास दुरुस्त न होना; अक्ल ठीक करना-ढंग से किसी का गर्व तोड़ना; अक्ल दौड़ना-सोच-विचार करना; अक्ल पर झाड़ू फिरना-मूर्खता पूर्ण व्यवहार करना, बात को बिल्कुल न

समझ पाना; अक्ल पर पत्थर पड़ना- बिल्कुल मूर्खता पूर्ण कार्य करना; अक्ल पर पर्दा पड़ना- किसी कारणवश अक्ल का काम ही न करना; अक्ल भिड़ाना-समझने का प्रयत्न करना; अक्ल मारी जाना-समझदारी जाती रहना, रफू चक्कर होना, समझदारी का काम न करना; अक्ल लड़ाना-सोच विचार करना; अक्ल से दूर रहना-समझदारी का काम कभी न करना; अक्ल से बाहर होना- समझ में न आना।

**अक्लमंद** वि. (अर.+फा.) बुद्धिमान, चतुर, समझदार, होशियार।

**अक्लमंदी** स्त्री. (अर.+फा.) बुद्धिमानी, समझदारी, चतुराई, होशियारी।

**अक्लांत** वि. (तत्.) 1. जो थका न हो, क्लान्ति रहित 2. जो मुरझाया न हो।

**अक्लिन्न** वि. (तत्.) जो आर्द्र या गीला न हो।

**अक्लिष्ट** वि. (तत्.) जो क्लिष्ट, दुरूह या कठिन न हो, सुगम, सहज, आसान, सरल, सीधा।

**अक्ली** वि. (अर.) 1. बुद्धि से संबंधित, 2. बुद्धिमान उदा. अक्ली छात्र।

**अक्लेद्य** वि. (तत्.) जिसे आर्द्र अथवा गीला न किया जा सके।

**अक्लेश** पुं. (तत्.) क्लेश हीनता वि. क्लेश से रहित।

**अक्ष** पुं. (तत्.) 1. दो गोल वस्तुओं या पहियों के बीचों-बीच लगा दंड या छड़, जिस पर वे दोनों वस्तुएं/पहिए घूमती/घूमते हैं, धुरी 2. जुए या चौसर के खेल का पासा।

**अक्षकुशल** वि. (तत्.) द्यूत खेलने में दक्ष, जुआ खेलने में प्रवीण।

**अक्षकूट** पुं. (तत्.) आँख की पुतली।

**अक्षक्रीड़ा** स्त्री. (तत्.) 1. पासों से खेला जाने वाला खेल, जुआ।

**अक्षणिक** वि. (तत्.) जो क्षणिक न हो, स्थायी।